सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2025-26

कक्षा:-6	विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक	पाठ:13 मोको कहाँ ढूँढ़े

कविता का सारांश

मनुष्य भगवान को मंदिर-मस्जिद में ढूँढता रहता है पर कभी भी अपने अंदर झाँककर नहीं देखता। ईश्वर किसी तीर्थस्थल में नहीं बसते अपितु वे तो सृष्टि के कण कण में विराजमान हैं। संत कबीर बाह्य आडंबर करने वालों पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि ईश्वर तो सबकी साँस में बसे हैं। भगवान को ढूँढ़ने के लिए कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं है। बिना किसी स्वार्थ के मानव सेवा करो तो ईश्वर प्राप्ति हो जाएगी। ईश्वर तो आपके विश्वास में बसते हैं। बस जरूरत है सच्चे मन से अपना कर्म करने की।

ना मैं जप------ श्वास में। -इन पंक्तियों का अर्थ है कि ईश्वर जप तप, व्रत उपवास आदि करने से नहीं मिलता। न ही उसे योगी-संन्यासी बनकर पाया जा सकता है। वह न तो ग्रह-नक्षत्रों में रहता है और न किसी गुफा या आकाश में रहता है। यदि उसे ढूँढना ही चाहते हो, उससे साक्षात्कार करना चाहते हो तो उसे अपने अंदर ढूंढ़ो ।वह तो प्रत्येक मानव के हृदय में वास करता है।

खोजि होय --------- विश्वास में।- इन पक्तियों में कबीर जी कहना चाहते हैं कि यदि तुम ईश्वर को ढूँढ़ना चाहते हो तो वह तुम्हें एक क्षण में ही मिल जाएगा। उसके लिए तुम्हें यहाँ-वहाँ घूमने-फिरने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी क्योंकि उसे ढूँढने के लिए केवल विश्वास की आवश्यकता होती है। ईश्वर केवल विश्वास में ही निवास करता है।

मौखिक कौशल

1. कविता के अंत में कवि ने कहा है कि भगवान विश्वास में बसते हैं।

2. यह कविता कबीर की रचना है।

लिखित कौशल

1. (क) कहाँ, पास (ख) कबीर, विश्वास

2. (क) लोग ईश्वर को ढूँढ़ने के लिए तीर्थ, एकांत निवास, मंदिर, मस्जिद, काबा तथा कैलाश पर्वत तक चले जाते हैं।

(ख) ईश्वर हमारे पास हैं। वे सब जीवों की साँस में बसे हैं। जो मनुष्य विश्वास रखता है उसको ईश्वर मिल जाते हैं।

मूल्यपरक प्रश्न

इस पद्य से हमें यह शिक्षा मिलती है कि ईश्वर को ढूँढ़ने के लिए आडंबर नहीं रखना चाहिए। ईश्वर तो कण-कण में बसते हैं। प्रत्येक जीव की साँस में ईश्वर रचे-बसे हैं। केवल मंदिर-मस्जिद जाने से ईश्वर प्राप्ति नहीं होगी अपितु ईश्वर प्राप्ति सच्ची मानव-सेवा द्वारा ही होगी।

भाषा कौशल

1. (क) एक (ख) मुझे (ग) तीर्थ (घ) मूर्ति (ङ) खोज (घ) व्रत